

वायु प्रदूषक

वायु प्रदूषक

सल्फर डाइऑक्साइड (SO₂):

- परिचय: यह जीवाशम ईंधन (तेल, कोकश और प्राकृतिक गैस) के उपभोग से उत्पन्न होता है तथा जल के साथ अधिक्रिया कर अम्ल वर्षा करता है।
- प्रभाव: श्वास संबंधी समस्याओं का कारण बनता है।

ओजोन (O₃):

- परिचय: सूर्य के प्रकाश में अधिक्रिया के तहत अन्य प्रदूषकों (छब्बे और टब्बे) से बनने वाला द्वितीयक प्रदूषक।
- प्रभाव: औख और श्वासन संबंधी श्लेष्म झिल्ली में जलन होना तथा अस्थमा के दौरे।

नाइट्रोजन डाइऑक्साइड (NO₂):

- परिचय: यह तब बनता है जब नाइट्रोजन ऑक्साइड (छब्बे) और अन्य नाइट्रोजन ऑक्साइड (नाइट्रोजन एस्पेक्ट्रल और नाइट्रिक एस्पेक्ट्रल) द्वारा में अन्य रसायनों के साथ प्रतिक्रिया करते हैं।
- प्रभाव: श्वासन रोग साथ ही यह अस्थमा को भी बढ़ा सकता है।

कार्बन मोनो ऑक्साइड (CO):

- परिचय: यह कार्बन युक्त यौगिकों के अध्यरूप दहन से प्राप्त एक उत्पाद है।
- प्रभाव: मासितक तक आस्थीजन की अपर्याप्त पहुँच के कारण श्वास होना, प्रम की विश्वित पैदा होना और चक्कर आता।

अनोनिया (NH₃):

- परिचय: अमोनो एस्पेक्ट्रल और अन्य यौगिकों के चयापचय द्वारा उत्पादित जिसमें नाइट्रोजन उपस्थित होता है।
- प्रभाव: औखों, नाक, गले और श्वासन मार्ग में तुरंत जलन और इसके परिणामस्वरूप अधापन, फेफड़ों की क्षति हो सकती है।

शीशा/लेड (Pb):

- परिचय: चांदी, प्लैटिनम और लोहे जैसी धातुओं के निकरण के दौरान अपने संबंधित अवस्थाएँ से अपशिष्ट उत्पाद के रूप में मुक्त होता है।
- प्रभाव: एरोमिया, कमज़ोरी और गुरुते तथा मरिताक की क्षति।

कणिका पदार्थ-पार्टिक्युलेट नीटर (PM):

- PM10: ऐसे कण जो श्वास के माध्यम से शरीर में प्रवेश करते हैं, इनका व्यास सामान्यतः 10 मिमी. या उससे भी कम होता है।
- PM2.5: ऐसे सूक्ष्म कण जो श्वास के माध्यम से शरीर में प्रवेश करते हैं, इनका आकार सामान्यतः 2.5 मिमी. या उससे भी छोटा होता है।
- झोत: ये इनके उत्पर्जन निर्माण स्थलों, कच्ची सड़कों, खेतों/मैदानों तथा आग से उत्पर्जित होते हैं।
- प्रभाव: हृदय की धड़कनों का अनियमित होना, अस्थमा का और संधीर हो जाना तथा फेफड़ों की कार्यक्षमता में कमी।

नोट: इन प्रमुख वायु प्रदूषकों को वायु गुणवत्ता सूचकांक में शामिल किया गया है जिसके लिये अल्पकालिक राष्ट्रीय परिवेशी वायु गुणवत्ता मानक निर्धारित किये गए हैं।